गुरु वंदना सप्ताह

दिनांक 5 जुलाई की संध्या को उस्ताद वसीफुद्दीन डागर ने अपने ध्रुपद गायन के साथ ओशो वर्ल्ड गैलेरिया में गुरु वंदना सप्ताह का उद्‌घाटन किया। कार्यक्रम की शुरुआत के पूर्व ओशो प्रवचन के एक उद्धरण का श्रवण करके उपस्थित ओशो प्रेमी-मित्रों ने ध्यान में प्रवेश किया। इससे संगीत की सूक्ष्मता में डूबने का उपयुक्त वातावरण तैयार हो गया। ओशो की वाणी ने स्मरण दिलाया कि सद्‌गुरु और शिष्य में कोई संबंध नहीं होता। यह कोई अन्य संबंधों जैसा संबंध नहीं है। सद्‌गुरु कोई व्यक्ति नहीं है—यह एक उपस्थिति है—ऐसी उपस्थिति जो वस्तुतः अनुपस्थिति जैसी है। शिष्य इससे संबंधित नहीं होता—इसमें डूब जाता है, विलीन हो जाता है।

उस्ताद वसुफुद्दीन ने अपने ध्रुपद गायन की शुरुआत सूर्यास्त संगीत के आलाप 'ओम् अनंत तम तरण तारणी त्वम् हरि ओम् नारायण' के सुकोमल स्वरों से की। श्रोता धीरे-धीरे ध्यान में प्रवेश करते हुए ऐसे मृदुल स्वरों की मादकता में विलीन होने लगे। तत्पश्चात उन्होंने 'छूटत पिचकारी, होरी खेलत राधिका संग' बंदिश को द्रुत गति से गाकर सभी श्रोताओं की चेतना को ऊर्जस्वी ढंग से जाग्रत कर दिया। गायन के तुमुल स्वर मानो आने वाली मानसून के मेघों की गड़गड़ाहट का पूर्वाभास दे रहे थे। शायद ऐसी भावदशा को व्यक्त करने के लिए भगवान बुद्ध का शब्द मेघ-समाधि सर्वथा उपयुक्त है।

ऐसे ऊर्जस्वी आरोहण के उपरांत राग 'मियां की मल्हार' की एक और बंदिश ने श्रोताओं को सौम्यता और स्थिरता की अनुभूति दी। 'आई है घटा उमड़-घुमड़' श्रवण करते हुए श्रोताओं की चेतना को पंख लग गए, फिर धीरे-धीरे बादलों के छंटने का अहसास होने लगा। और बादल छंटें तो पूर्णिमा का चांद अपनी पूरी गरिमा और महिमा में प्रकट हो।

उस्ताद वसीफुद्दीन की पखावज पर श्री प्रवीण कुमार आर्य ने, मृदंग पर श्री अरुण कुमार झा, और तानपुरे पर श्री हरिनाथ झा और लॉरेंस वस्ती ने संगत की।